मनसा सेवा - 48

अव्यक्त बापदादा :- (31/12/1990)

➳ _ ➳ इस वर्ष क्या करेंगे? नवीनता करेंगे ना! इस वर्ष को 'समारोह वर्ष मनाना।" सोच रहे हो तपस्या करनी है या समारोह मनाना है? तपस्या ही बड़े-ते-बड़ा समारोह है। क्योंकि हठयोग तो करना नहीं है। तपस्या अर्थात् बाप से मौज मनाना। मिलन की मौज, सर्व प्राप्तियों की मौज, समीपता के अनुभव की मौज, समान स्थिति की मौज। तो ये समारोह हु आना। सेवा के बड़े-बड़े समारोह नहीं करेंगे, लेकिन तपस्या का वातावरण वाणी के समारोह से भी ज्यादा आत्माओं को बाप की तरफ आकर्षित करेगा। तपस्या रूहानी चुम्बक है जो आत्माओं को शान्ति और शक्ति के अनुभव का दूरसे अनुभव होगा। तो अपने में क्या नवीनता लायेंगे?

➳ _ ➳ नवीनता ही सबको प्रिय लगती है ना तो सदैव अपने को चेक करो कि आज के दिन मन्सा अर्थात् स्वयं के संकल्प शक्ति में विशेष क्या विशेषता लाई? और अन्य आत्माओं के प्रति मन्सा सेवा अर्थात् शुभ भावना, शुभ कामना के विधि द्वारा कितना वृद्धि को प्राप्त किया? अर्थात् श्रेष्ठता की नवीनता क्या लाई?

➳ _ ➳ साथ-साथ बोल में मधुरता, सन्तुष्टता, सरलता की नवीनता कितनी लाई? ब्राह्मण आत्माओं के बोल साधारण बोल नहीं होते। बोल में इन तीनों बातों में से अपने को और अन्य आत्माओं को अनुभूतिहो। इसको कहा जायेगा नवीनता। साथ में हर कर्म में नवीनता अर्थात् हर कर्म स्व के प्रति व अन्य आत्मा के प्रति प्राप्ति का अनुभव करायेगा। कर्म का प्रत्यक्षफल व भविष्य जमा का फल अनुभव हो।

➳ _ ➳ वर्तमान समय प्रत्यक्षफल सदा खुशी और शक्ति की प्रसन्नता की अनुभूतिहो और भविष्य जमा का अनुभव हो। तो सदैव अपने को भरपूर सम्पन्न अनुभव करेंगे। कर्म रूपी बीज प्राप्ति के वृक्षसे भरपूर हो। खाली नहीं हो। भरपूर आत्मा का नेचुरल नशा अलौकिक होता है। तो ऐसे नवीनता के कर्म किये? साथ में सम्बन्धसम्पर्क इसमें नवीनता क्या लानी है?

➢➢ तपस्या ही बड़े से बड़ा समारोह है...

➳_ ➳ स्वयम को बदलने के लिए संकल्प करे

→ मैं आत्मा हूँ...

➳_ ➳ विश्व को बदलने के लिए संकल्प करे

→ मैं आधारमूर्त हूँ...

➢➢ बेहद की समझ चाहिए असाधारन व अलौकिक होने के लिए...

➳_ ➳ तपस्या क्या है?

→ तपस्या युग में तुम वह नहीं कर सकते जो दुनिया कर रही है...

→ तुम अपने पिता से अच्छे कपड़े, भोजन नहीं मांग सकते क्योकि तुमने पता है कि तुम वनवाह में हो...

→ ये दुनिया असार है... सब खत्म हो जाने हैं...

➢➢ महान तपस्वी की निशानी क्या है?

➳_ ➳ इस संसार के प्रति वैराग

→ सब कुछ ताश के पत्तों क घर की तरह गिर जाना है...

➳_ ➳ संसार के वैभव, पदार्थों में कही भी उसकी आँख नहीं डूबती...

➳_ ➳ एक संकल्प में शरीर से न्यारा हो जाना

➳_ ➳ अपने लक्ष्य पर दृढ रहना...

➳_ ➳ तपस्वी अर्थात

→ वैरागी

→ अनासक्त

→ निर्मोही

→ त्यागी

→ एकांतवासी

→ अन्तर्मुखता की गुफा में बैठ तपस्या करना

→ न्यारे प्यारे

→ एकव्रता

→ कर्मेन्द्रिया शांत हो गयी हैं...

→ देह अभिमान का त्याग...

→ आत्मिक स्वरूप में स्थित रहना और आत्मिक स्वरूप में सबको देखना...

→ एक्यूरेट श्रीमत पर चलने वाले...

→ अचल अडोल

→ छोटी छोटी बातो से अप्रभावित

→ निंदा स्तुति मान अपमान सबमे समान

→ पराधीन नहीं... कोई अवलम्बन नहीं, स्वराज्य अधिकारी

→ निरंतर और अखंड तपस्या की ज्योति जलती हो...

→ मौजो का जीवन

→ एक बाप दूसरा न कोई

→ हड्डी हड्डी सेवा में स्वाहा करने वाले

→ इस संसार के खेल को साक्षी होकर देखने वाले

➢➢ तपस्वी आत्मा बनने के लिए क्या चाहिए?

➳_ ➳ बहुत परहेज

→ ईश्वरीय प्राप्तियो के आगे संसार की प्राप्तिया गौण नजर आये...

➳_ ➳ त्याग

➳_ ➳ अपरिग्रह

➳_ ➳ वैराग वृत्ति

➳_ ➳ तपस्या से अति लगाव चाहिए...

➢➢ तपस्वी आत्मा के कर्तव्य

➳_ ➳ सबके प्रति शुभ भावना रखना...

➳_ ➳ निर्बल आत्माओं को बलवान बनाना...

➳_ ➳ इस संसार का उद्धार करना

→ मैं आधार मूर्त, उधार मूर्त आत्मा हूँ..

➳_ ➳ सबमे उमंग उत्साह भरना

➳_ ➳ अन्धकार से प्रकाश की और लाना...

➳_ ➳ भटक रहे हैं उनको सच्चा रास्ता दिखाना...

➳_ ➳ नास्तिको में प्रभु प्रेम का झरना बहा देना

➳_ ➳ ब्राह्मण परिवार में तपस्या की लहर फैलाना...

➳_ ➳ हलचल के वायुमंडल को शांत करना...

➳_ ➳ सबका प्रभु से मिलन करवाना...

➳_ ➳ मूर्छित आत्माओं को सुरजीत करना..

➳_ ➳ संसार में तपस्या और वैराग की लहर फैला देना...